नव निर्माण®

भाग – ३

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

NEW ERA'S SELF HELP®

समर्पण

यह पुस्तक समर्पित है
वसुंधरा के उन रक्षको को,
जो
इसे अपनी विरासत नही
बल्कि
अपने बच्चो की,
धरोहर मानकर
जतन करते है।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।
विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

नव निर्माण®

प्रकाशन	:	प्रथम
प्रकाशक	:	विलास जैन
लेखन	:	विलास जैन
प्रतिया	:	१०००
चित्रांकन	:	विलास जैन
अक्षरांकन	:	नितीन मोरे
निर्मिती	:	विलास जैन
मुद्रक	:	विश्वरुपा प्रिंटस्, जलगांव

© New Era Self Help Marketing India Ltd.
All Rights reserved 2013
New Era Self Help Marketing India Ltd. is registered in India under Public Ltd.
Company Reg.No. : U 51909 MH 2002 PLC 138100

सर्वाधिकार सुरक्षित –
पूर्वानुमती के बिना इस पुस्तक में से किसी भी अंश को किसी भी कारण से या किसी भी रुप में पुनर्मुद्रित नहीं किया जा सकेगा। इस प्रकाशन के संदर्भ में अनधिकृत कृति का पता चलते ही संबंधित व्यक्ति या संस्था पर हानि के संदर्भ में कानूनी कारवाई की जायेगी।

यह कार्य नही क्रांति है।

प्रस्तावना ...

बढ़ती स्पर्धा के कारण स्कूलों में अभ्यास क्रम बढ़ रहा है। दूसरी तरफ जीवन की बढ़ती जरुरतों को पूरा करने माँ–बाप की व्यस्तता बढ़ रही है। इसी के कारण हम इच्छा और साधन होते हुए भी हमारे बच्चों को हमारी परंपरा, संस्कार, अच्छी आदतें जैसी अमूल्य चीजें नहीं दे पा रहे हैं। आज हम वह सब नहीं कर पाते जिससे की आने वाली पिढ़ी सुसंस्कृत और सुदृढ़ बने। जीवन की छोटी छोटी बातें जो अच्छा इन्सान बनने के लिए जरुरी है, वह बच्चो के सामने सरल शब्दों में रखना, यह इस किताब का प्रथम लक्ष्य है। हमारे बच्चे सिर्फ पैसे कमाने की मशीन नहीं बल्कि पैसों का सदुपयोग कर एक अच्छा समाज बनायें, जीवन का भरपूर मजा उठायें, और सही मायने में सुखी और समाधानी हो। ऐसा पवित्र और उतना ही अनूठा ध्येय हमारा है। इसी के साथ बच्चों का जीवन के हर पहलू के तरफ देखने का नजरिया बदले। उन्हें एक सकारात्मक नजरिया मिले। इस बात का ध्यान हर कविता में रखा गया है।

हम जो लक्ष्य लेकर चल रहे है उसमे माता, पिता और गुरुजनों का सहकार्य, प्रेम और सुझाव अनिवार्य होगा। पच्चीस–पच्चीस कविताओं के चार खण्ड पहले वर्ग से लेकर तो नवमी कक्षा के बच्चों के लिए बनाये गऐ है। जीवन के कुल १०० महत्वपूर्ण विषयों पर कवितायें रची गई है। अपने बच्चों के हृदयमें इसमें से कुछ कवितायें भी हम उतार सके तो वे कभी असफल, निराश या बीमार नहीं होंगे ऐसा हमारा मानना है। और हम सुनहरे भविष्य में एक सुदृढ़ कड़ी जोड़कर हमारा सामाजिक दायित्व पूरा कर सकेगें। अन्त में इतना ही लिखूंगा की इस किताब से मिलनेवाली पूरी राशी समाज, पर्यावरण की सुरक्षा और पेड़ पौधे लगाने में ही खर्च होगी। जिससे हम आनेवाली पिढ़ी के लिए एक सुदृढ़ समाज, सुखद पर्यावरण एवं सुंदर धरती छोड़ सकेंगे।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

सूची

अ.नं.	विषय	पृष्ठ क्र.
१)	यश	०१
२)	आशा	०२
३)	धैर्य	०३
४)	उड़ान	०४
५)	खुद्दारी	०५
६)	शील	०६
७)	साधना	०७
८)	सहनशीलता	०८
९)	स्वभाव	०९
१०)	हस्ताक्षर	१०
११)	शिष्टाचार	११
१२)	हमारी जरुरतें	१२
१३)	आनंद	१३
१४)	संगत	१४
१५)	सावधानी	१५
१६)	सार	१६
१७)	बचत	१७
१८)	मदद करो	१८
१९)	सुविधा	१९
२०)	सहानुभूति	२०
२१)	परोपकार	२१
२२)	गुरुजनों का आदर	२२
२३)	स्वार्थ	२३
२४)	निराशा	२४
२५)	अमन और शांति	२५

यश

अनेक विषयोमे यश पानेका
पहले तुम लक्ष्य बनाओ,
फिर पाने इसे मेहनत
और लगन को लगाओ।

अगर दिमाग में रखोगे यश
तो अभिमान बढ़ायेगा,
और दिल में रखा तो
आत्मसम्मान जगायेगा।

यश है सबकुछ दुनियाँमें
खुदसे पहले मेहनत करवाओ,
सच्चाई और ईमानदारी के
तुम सिपाही जरुर कहलाओ।

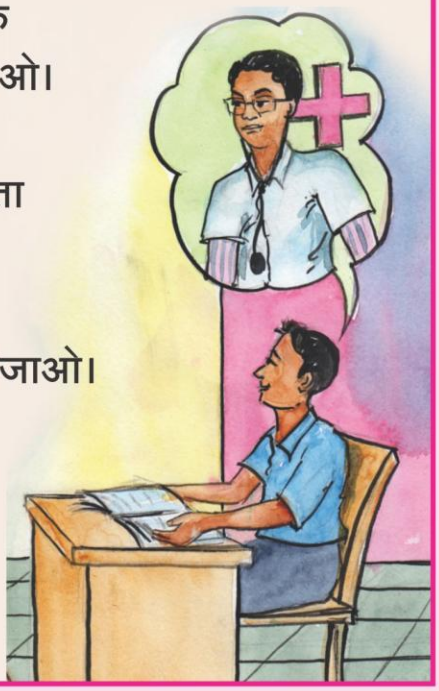

यश हमको सम्मान दिलाता
हमेशा इसे गले लगाओ,
इसे पानेके बाद झेली हुई
कठनाईयाँ फिर तुम भूल जाओ।

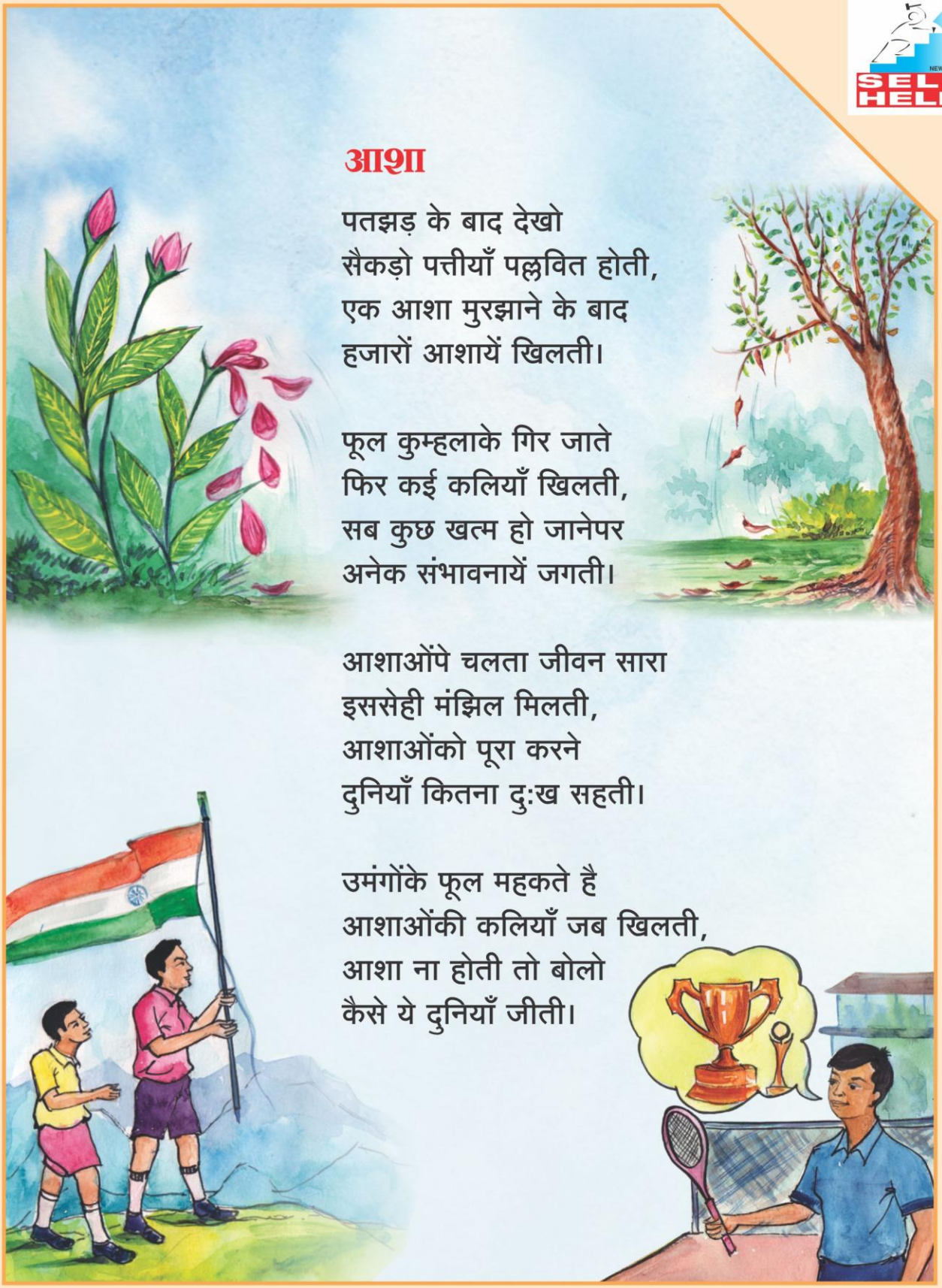

आशा

पतझड़ के बाद देखो
सैकड़ो पत्तीयाँ पल्लवित होती,
एक आशा मुरझाने के बाद
हजारों आशायें खिलती।

फूल कुम्हलाके गिर जाते
फिर कई कलियाँ खिलती,
सब कुछ खत्म हो जानेपर
अनेक संभावनायें जगती।

आशाओंपे चलता जीवन सारा
इससेही मंझिल मिलती,
आशाओंको पूरा करने
दुनियाँ कितना दु:ख सहती।

उमंगोंके फूल महकते है
आशाओंकी कलियाँ जब खिलती,
आशा ना होती तो बोलो
कैसे ये दुनियाँ जीती।

धैर्य

संकटोमे धीरज नहीं खोनाही
बच्चों धैर्य कहलाता,
जीवनके कठिनाईयों में
यह बहुत काम आता।

संकटमें पहले उत्साह दिखता
बादमे धैर्य खोने लगता,
आखिर तक लड़ने वालाही
देखो विजयी होता।

अकसर संकटोंमे धैर्य खोनेसे
हर कोई हार जाता,
धैर्य रखकर कुछ कदम चलता
तो शायद जीत जाता।

शरीर और मन की
ताकत ही धैर्य कहलाता,
याद रखो तुम इतना
सिर्फ इससे ही आदमी जीतता।

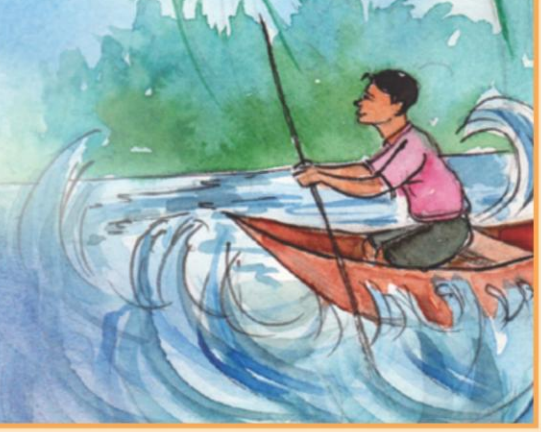

उड़ान

उड़ना है हमें
छूना है आसमान,
पायेंगे मंजिल
जीतेगें ड़गर ये अनजान।

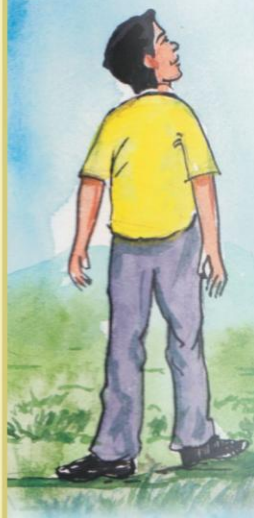

साथमें है अच्छे इरादे
और सच्चा ईमान,
पीछे नही हटेगें
चाहे करे कोई परेशान।

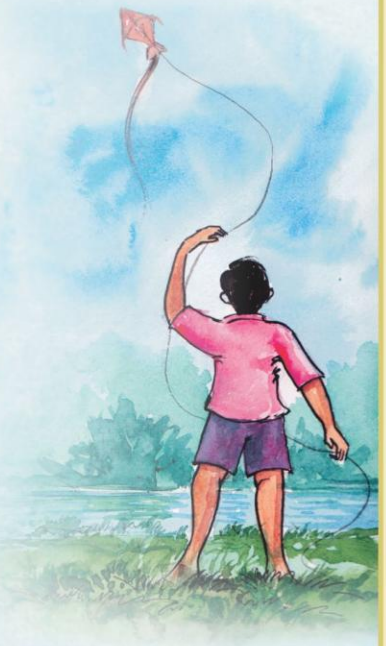

भुजाओंमें हमारे हिमालय
और दिलमें सागर महान,
विचारोमे गंगा की पवित्रता
हौसलोमे कंचनजंगा की शान।

माँ भारती के सेवाकी
अब हमे है आन,
संकट कितने भी आये
खड़े रहेंगे सीना तान।

खुद्दारी

बुरी बात है मांगना
और लाचारी,
बच्चों तुम जीवनमें
अपनोओ खुद्दारी।

बनाओ अपना आशियाना
चमन भी निर्माण करो,
खुद के योग्यताओं पर
तुम विश्वास धरो।

अपने मेहनतसे मिली सफलताके
सहारे तुम जीवन बिताओ,
कष्ट कर कुछ पाने का
दिलमे नया दीप जलाओ।

दूसरो के उपकार पर जीना
है बुरी बात जान जाओ,
मनुष्य खुद जीते है
जानवरोको औरोके सहारे पाओ।

शील

गलत आदतों और कामोसे
खुदको बचानेकोही शील कहेंगे,
जो इसका पालन करेंगे
वो बलवान और बुध्दिमान होगें।

अच्छा समाज बनाने
शीलवान लोगोंकी दरकार,
समाज सुदृढ़ बनाता यह
सदगुणो की आती बहार।

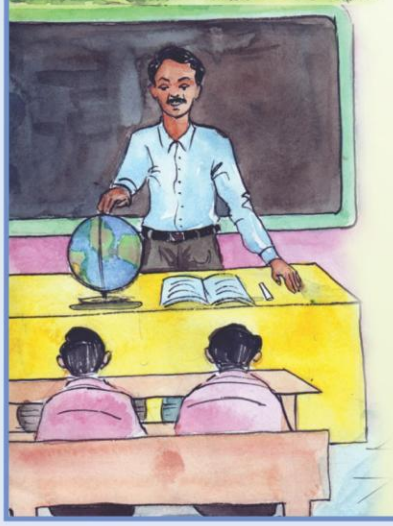

शील और सत्य को बचाने
काम आते है अच्छे संस्कार,
कोई भी लोभ प्रलोभन
नहीं विचलित करते तुम्हारे विचार।

जो भौतिक सुख पाने
बेचते है अपने विचार,
अच्छी जिंदगी जी नहीं पाते
बन जाते गल्तियोंके शिकार।

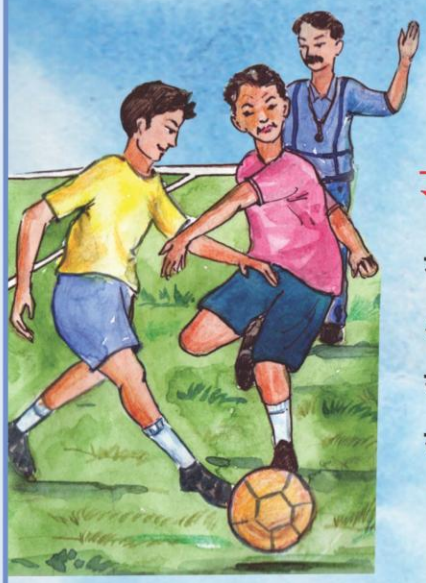

साधना

गहराई और लंबे समय तक
अभ्यास कहलाता है साधना,
जो बच्चे मेहनत से ड़रते
उनकी ना कुछ पूछना।

प्रभुत्व पानेके लिये जरुरी
रियाज़, साधना, आराधना,
कोई भी चीज सीखने
तुम हरदम तैयार रहना।

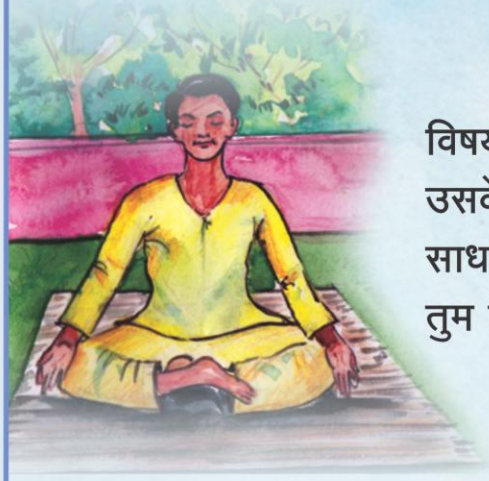

विषय थोड़े ही सही पर
उसके गहराई में घुस जाना,
साधना करके उसमें
तुम विशेषज्ञ कहलाना।

कोई भी काम करते वक्त
तुम आजमाओ साधना,
देखो कैसे जग झुकता
यह राज तुम सिखना।

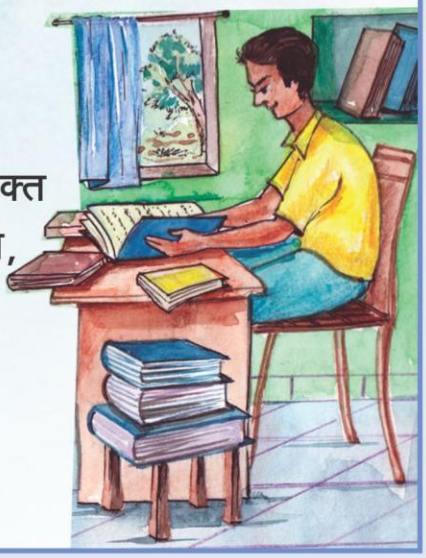

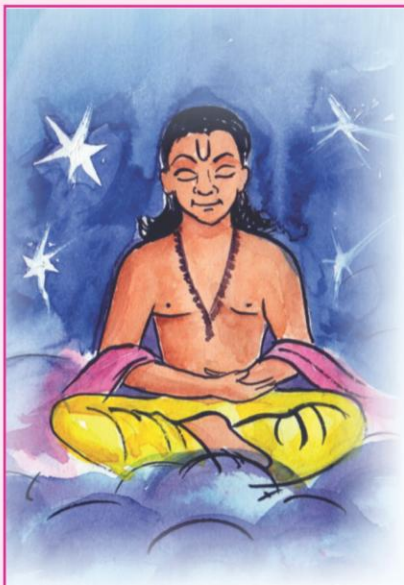

सहनशीलता

दु:ख सहने की चरम सीमा
को ही सहनशीलता कहते,
इसीके कारण ही कई
आम आदमी महान बनते।

सहनशीलता ही थी
खोजो और निर्माणोंके पीछे,
इसके अभाव के कारण तोड़ा
दम कईयोंने मंझील के नीचे।

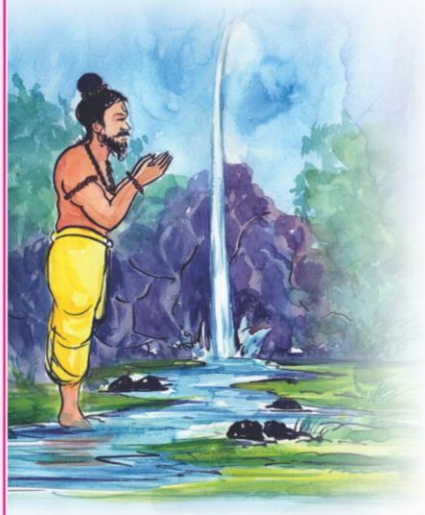

सहनशीलता ने लाई देखो
कितनी विजयश्री खींचे,
भागीरथने अपने हटसे
गंगा लाई स्वर्गसे नीचे।

तपश्चर्यां की थी ध्रुवबालने
कितने विपरीतता को सहते,
बैठा जाके आसमानके गोद मे
देखो कितने जमाने बीते।

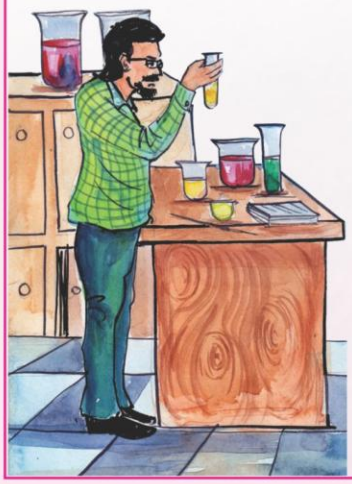

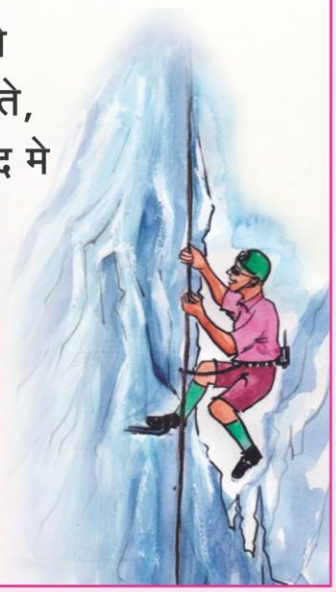

इसीके कारण हम आज
जीवन की ऊचाईयाँ नापते,
ना हारो इससे
मारो ना मझधारमे गोते।

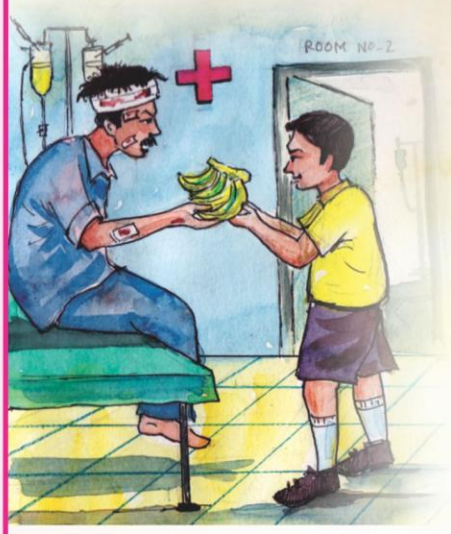

स्वभाव

शांत स्वभाव से ही
तुम पूरा आनंद उठाओगें,
तेज स्वभाव रखनेसे
हरदम विचलित रहोगें।

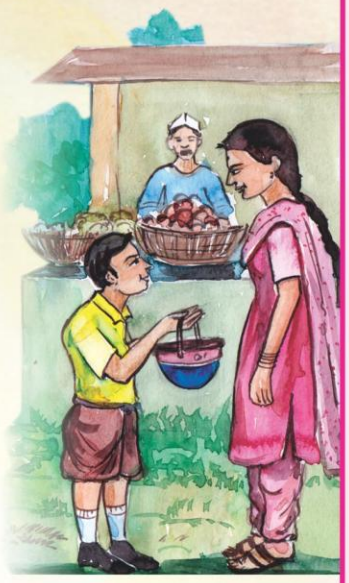

स्वभाव ही सबकुछ जीवनमे
सोचोंगे तो जानोगें,
इसीकी कारण तुम
अच्छा काम कर पाओगें।

सुस्वभावसे ही तुम जीवनमे
सफल कहलाओगें,
कुस्वभाव वाले व्यक्ति
सिर्फ हात मलते बैठेंगें।

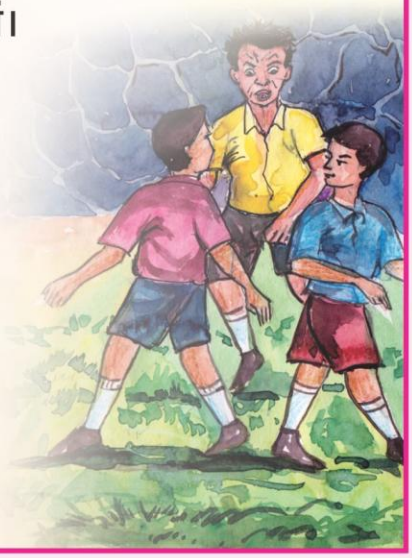

शांत स्वभावसेही तुम
लोगोका विश्वास जीत पाओगे,
इसीके कारण ही तुम
'मिस्टर ड़िपेड़ेंबल' कहलाओगे,

हस्ताक्षर

मोतीयों जैसे सुंदर हो
हस्ताक्षर तुम्हारे,
पढ़ते वक्त जानजाये दुनियाँ
स्वभाव तुम्हारा, शब्दोंके सहारे।

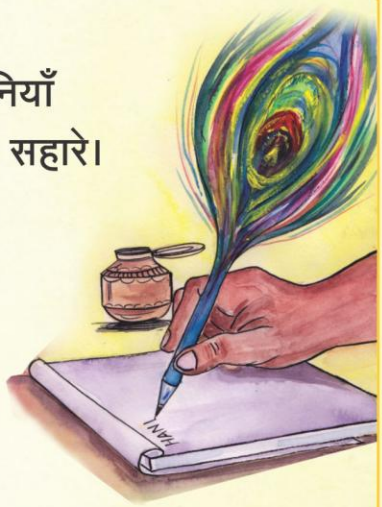

गहरे ज्ञान को समझाने
अच्छे हस्ताक्षर काम आते,
अच्छी लिखाई न हो तो
बड़े पंड़ित अनाड़ी कहलाते।

यह सबसे ज्यादा जरुरी
है तुम्हारे लिये,
नहीं तो इतने मेहनतसे तुम
पढ़े तो किसके लिये।

आज हम वक्त निकालेंगे
हस्ताक्षर दुरूस्त करनेके लिये,
लिखेंगे हम खूब सारा
दुसरोंको ज्ञान देने के लिये।

शिष्टाचार

सही वक्त पे
सही हाव भाव,
और बर्ताव कोही
शिष्टाचार कहते,
ऐसे करने वाले
देखो कितनोको
अपना करते।

शिष्टाचार का महत्व
बढ़ रहा है
बच्चों तुम भी
इसको सीखो,
यह निकले तुम्हारे
दिलके अंदरसे
इस बात को
ध्यान में रखो।

हर बात पर
तुम सबको
'विश' करना सीखो,
गर कोई तुम्हारे
काम आवे तो
उसे धन्यवाद कहकर देखो।

बताओ सबको वह
कितने अच्छे है ,
यह भी कहो
की बाते उनकी
तुम्हारे दिलमें
मिश्री घोल रही हैं।

हमारी जरुरतें

कमसे कम हो
हमारी जरुरतें,
जीवन ना बीत जाये
उन्हे पूरा करते।

जो जरुरतों का
अंबार खड़ा करते,
वो जीने के लिये
वक्त नही दे पाते।

जीवन मे मिले
ज्ञान और आनंद की बाते,
कितने अच्छे लगते तुम
जब हँसते और खिलखिलाते।

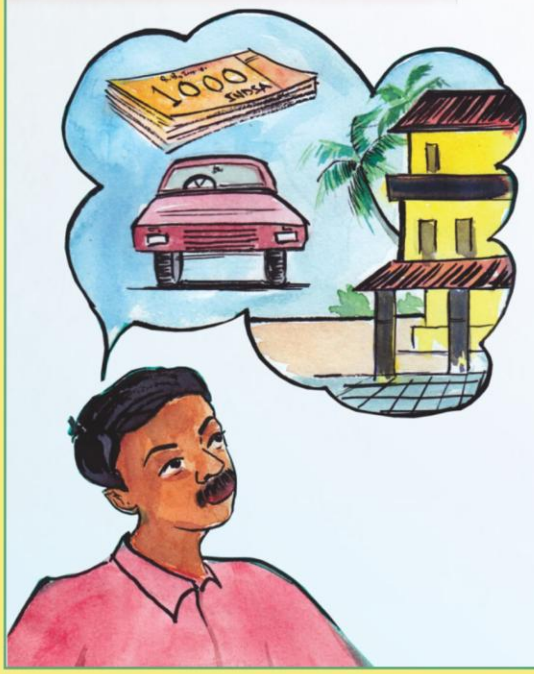

कुछ कमियों के साथ भी
हम आराम से जी पातें,
उतना ही हम आनंद उठायेंगे
जितनी होगीं कम जरुरतें।

आनंद

आनंद के बिना जीवन
बच्चों करना नहीं पसंद,
आनंद की परिभाषा समझो
वरना हो जाओगे बेबंद।

सृष्टिमें भी छिपा हुआ
देखो कितना आनंद,
पशु पक्षी मजे में गाते
पेड़ पौधे देते परंमानंद।

किसीको दु:ख देनेसे या
ताने मारनेसे यह नही आता,
यह तो सिर्फ स्वभावकी
विकृती कहलाता।

देता सही आनंद संगीत
मन को प्रफुल्लित करता,
बच्चो बाटो आनंदको
बाटनेसे यह दुगना होता।

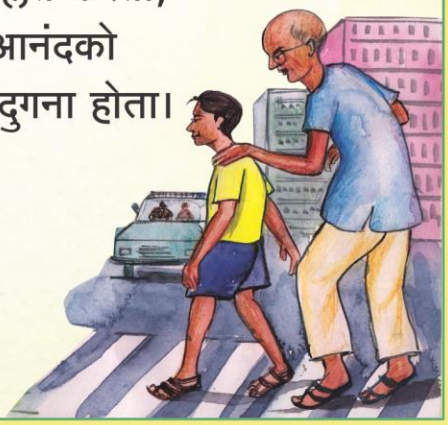

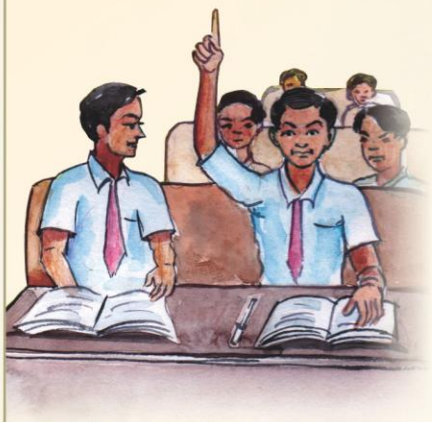

संगत

जीवन में संगत का
महत्व है बड़ा जानना,
अच्छी संगतको ही
सिर्फ तुम चुनना।

बच्चों तुम अपनेसे होशियार
बच्चो की संगत करना,
अच्छे काम और गुणोसे
तुम अच्छे आदमी बनना।

बुरी संगत में तुम्हारे
विचार भी बुरे बन जायेगें,
बुरे आदमी के साथ रहकर
तुम भी बुरे कहलावोगें।

बच्चो बुरी संगत का
परिणाम भी बुराही होता,
बुरे आदमी के साथ रहकर
वह बुराही काम करता।

सावधानी

कोई भी काम करो
बरतो सावधानी,
अच्छी नहीं होती
करना मनमानी।

गफलत से देखो
होती कितनी परेशानी,
छोटी सी एक गलती
दु:खों में कटती जिंदगानी।

काम हो कोई भी
पूरे ध्यानसे करना,
एक छोटा सा छेद
डुबो देता नाव वरना।

मेहनत और ताकत का
संभालकर इस्तेमाल करना,
वक्त बच जायेगा
आसान होगा जीना।

खेल कूद, भागा दौड़ीमें
तुम सावधानी बरतना,
छुट्टियाँ ये सुहानी
तुम खुब मजेसे काटना।

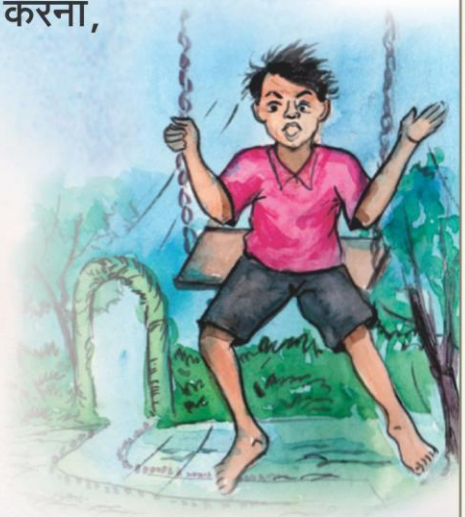

सार

शब्दो में मत उलझो
ना घूमो इनके गोलाकार,
समझो इनका अर्थ तुम
ढूंढ़ो क्या है इनका सार।

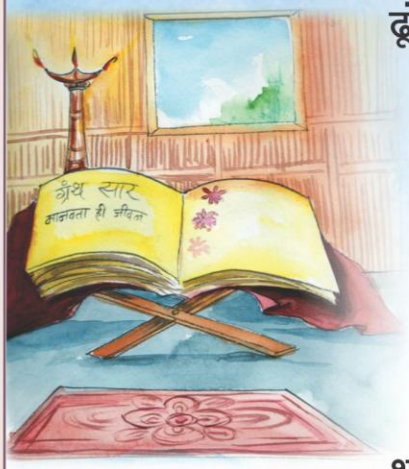

शब्दो के अनुसार जीओगे
तो बढ़ेंगे मनके विकार,
शब्दों के अंदर उतरोंगे
तो खुलेगें मंझील के द्वार।

शब्द से देखो अर्थ बड़ा
सार पे है जग खड़ा,
शब्द में भावनायें छिपती
ढूंढ़ने वाला इसे बड़ा।

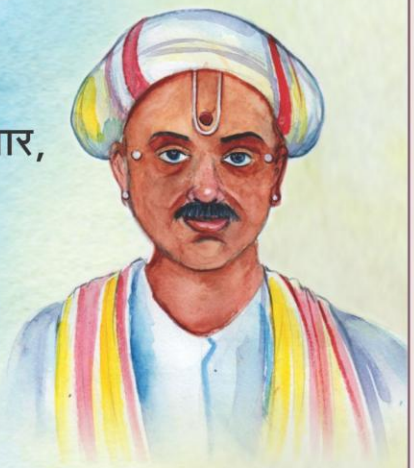

हर शब्दमे होता सार
समझनेवाला इसे होशियार,
जो समजा वही है
विजय का शिल्पकार।

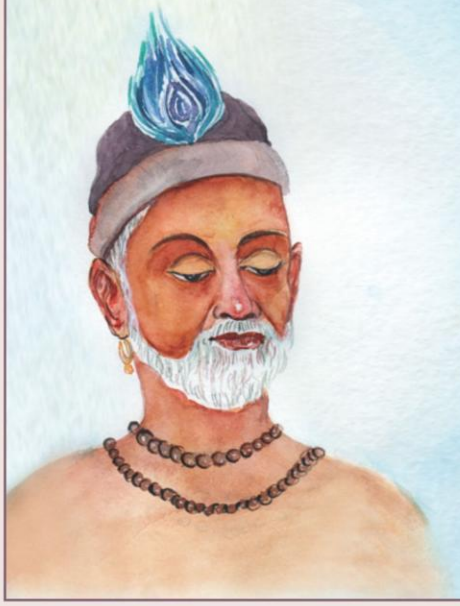

जीवन का भी तुम
निकालो सही सार,
वरना हो जायेगी
यह जिंदगी बेकार।

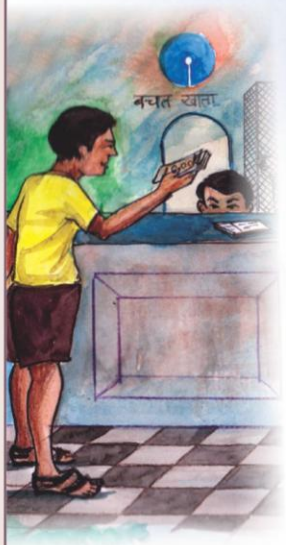

बचत

बचत करना अच्छा गुण
इसे तुम अपनाओ,
वक्त, पैसा और ऊर्जा की
बचत करों और करवाओ।

एक रुपय्या तो बीज है
बचाकर इसे धन कमाओ,
यारो इसे संभालो और
बूंद बूंद से सागर बनाओ।

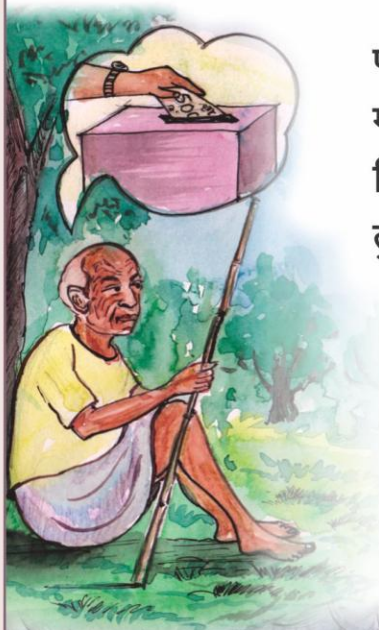

पराग कण इकट्ठा करना
मधुमख्खी से तुम सीखो,
चिटीयों जैसे मिट्टी इकट्ठा कर
तुम रज का पहाड़ बनाओ।

बचत करने को तुम ना
कजूंसी करना समझो,
धन कमानेसे ज्यादा
तुम बचाना सीखो।

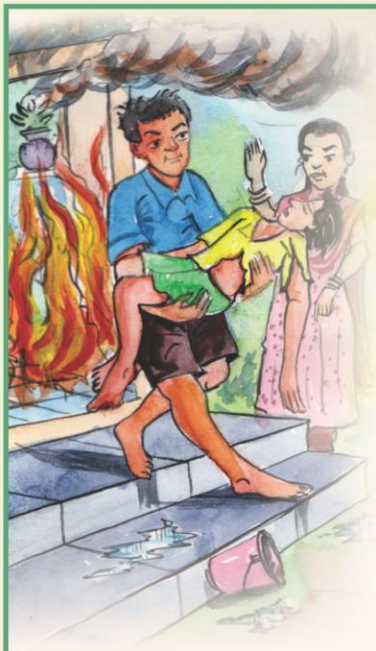

मदद करो

गर हो कोई मुसीबतमें
तो उसे मदद करो,
औरो के लिये एक
अच्छी मिसाल कायम करो।

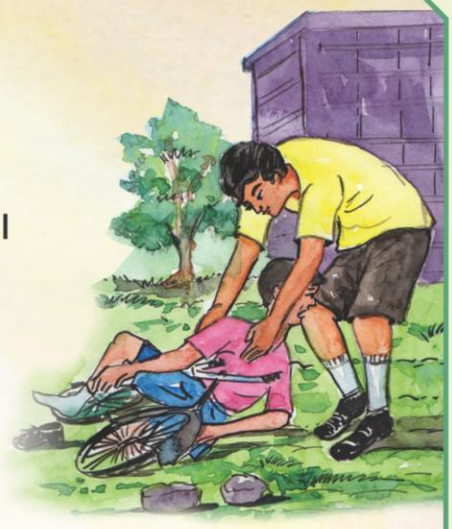

मदद करके सबकी तुम
उनको अपना करो,
खुद के दिल में फिर
खूब सारी खुशियाँ भरो।

दूसरोंको मदद कर उनपर
खुशियाँ न्योछावर करो,
बांटकर ही सबकुछ मिलता
यह ध्यान में धरो।

कोई तुम्हारी मदद का
गलत फायदा न उठा पाये,
हर मदद तुम्हारी दूसरोंको
मदद करने की प्रेरणा दे जाये।

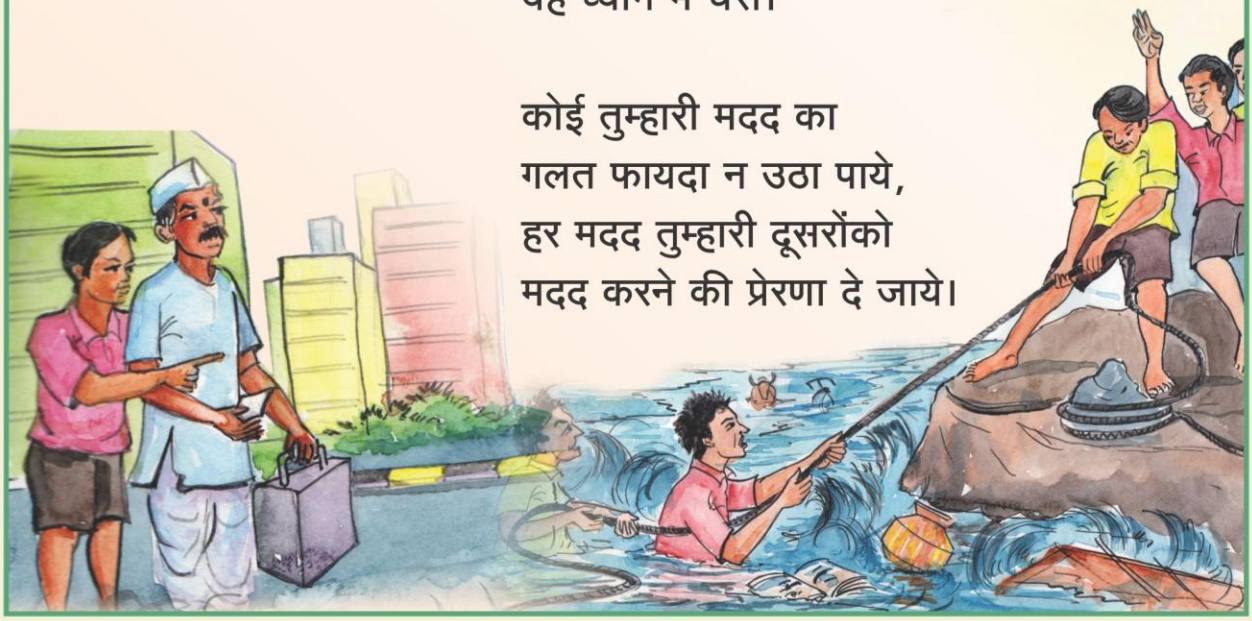

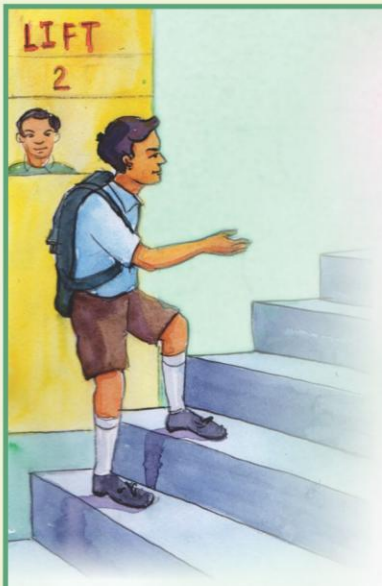

सुविधा

बच्चो सुविधाओं के
तुम गुलाम मत बनना,
सुविधायें नही भी हुयी तो
कटती अच्छी जिंदगी यह जानना,

बिना सुविधाओंके भी
देखो हुये कितने महान,
सुविधाओंने बना दिये
कमजोर कितने बलवान।

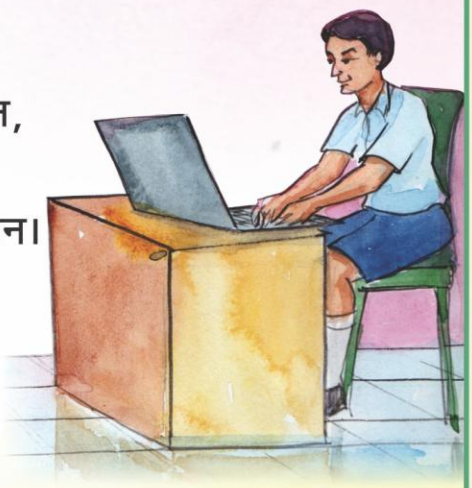

सुविधायें कमजोर करती
तुम्हारे सहने की ताकत,
देखो कही बने ना यह
तुम्हारी गलत आदत।

निष्क्रियता और आलस
आते सुविधा के कारण,
इसके गुलाम ना हो तो
कर सकते सकटोंका निवारण

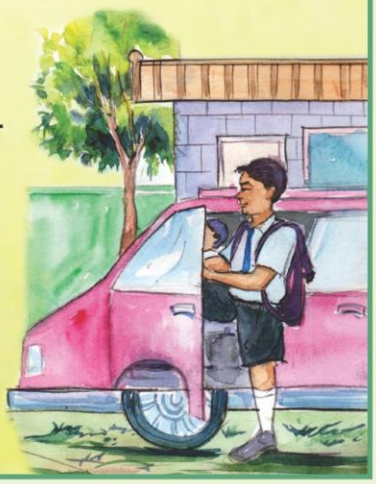

सुविधाओं को तुम
दवॉईयों की जैसे अपनाओ,
गलत परिणाम हो सकते है
गर बड़े मात्रामें इसे खाओ।

सहानुभूति

जब तुमको होगी बच्चो,
दुसरोके दु:ख की अनुभूति
वही होगी सहानुभूति।

औरोके दु:खो को महसूस कर
तुम जब भावनायें व्यक्त करोगें,
ऐसा करनेसे तुम उसके
दिल में बस जाओंगे।

सिर्फ आदमियोंसे ही नहीं
जानवरोंसे भी सहानुभूति रखो,
उनकी यातनायें समझकर
तुम उनका ध्यान रखो।

पेड़ पौधोको भी है
देखो इसकी जरुरत,
मानवों के अत्याचार से
कितने हैं वो हताहत।

परोपकार

संत महात्माओंने कहा
तुम परोपकार करो,
जो भी हो दीन दुखियारे
उनकी झोली खुशियोंसे भरो।

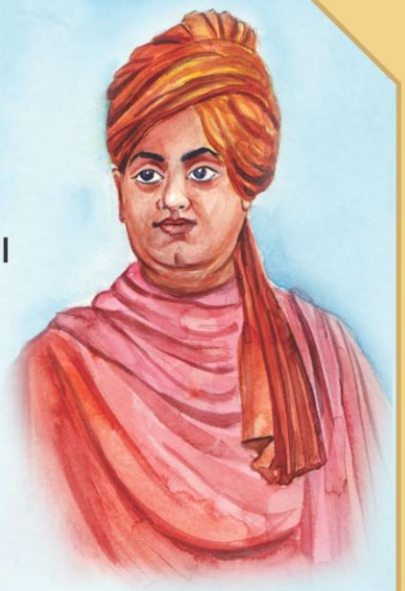

खुशियाँ देनेसे दुगनी होती
यह गणित पहले समझो,
छीननेसे नहीं मिलती
तुम इसमे ना उलझो।

देखो कितने महान हस्तियोंने
दूसरोंके लिये जिंदगी बिताई,
दुनियाँमें आये हो तो किसीके
काम आओ यह रीत दिखाई।

पशु पक्षी और जानवरों पर
भी तुम परोपकार करो,
खुद शांती और आनंदसे रहो
और उन्हें भी सुख प्रदान करो।

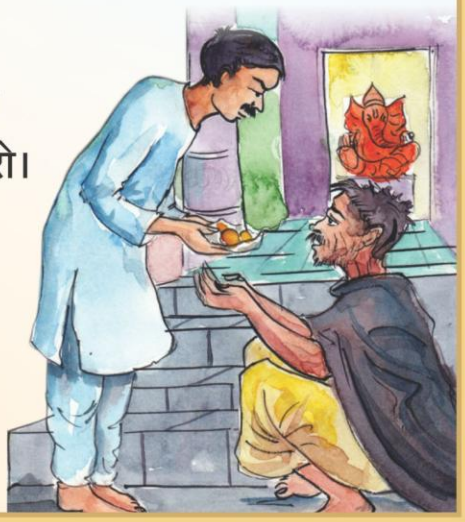

हर धर्म ग्रंथ यही कहता
दूसरोकी मदद करो,
देखो परोपकार करके तुम
दिलमें भगवान के रहो।

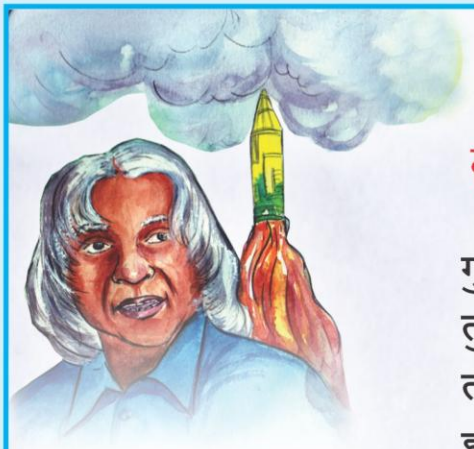

गुरुजनोंका आदर

गुरुजनोंका आदर गर
तुम नहीं करोगें,
तो बताओ इतना सारा
ज्ञान कहासे लाओगें।

गुरुही घड़ते है तुमको
आवश्यक बाते तुम्हे सिखाते,
क्या अच्छा और क्या बुरा
इसका महत्व वह हमें बताते।

भगवानसे भी बड़े हमे
हमारे गुरु प्रतीत होते,
येही देते हमें ज्ञान
अच्छा आदमी बनाते।

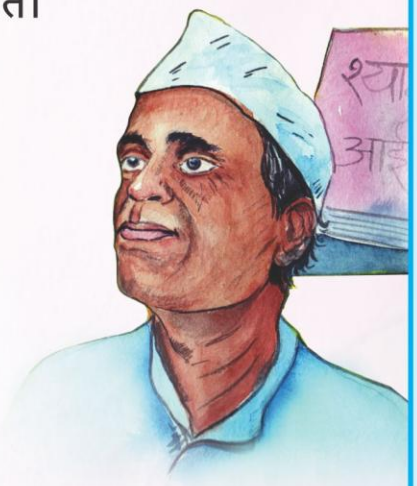

गुरु के बिना हम
अनपढ़ गवार रह जाते,
अज्ञान मे जीकर
हम आदमी कहाँ कहलाते।

स्वार्थ

छोड़ो स्वार्थ सब मिल
आज एक नारा लगाओ,
दूसरो का मददगार
एक सुंदर समाज बनाओ।

स्वार्थ का दायरा सीमित
जीवन बड़ा विशाल होता,
अकेले लढ़ने वाला
बेहाल हो जाता।

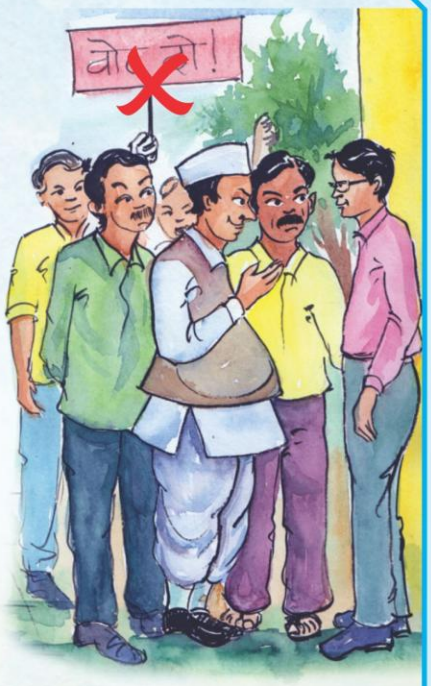

सोचो आज क्यो परिवार
और समाज प्रिय कहलाता,
स्वार्थ छोड़नेसे व्यक्ति सबका
कितना अपना कहलाता।

जीवन मे आये तो
सबकी सोचो मेरे भाई,
हम भी जल जायेंगे
गर गलीमें किसीने आग लगाई।

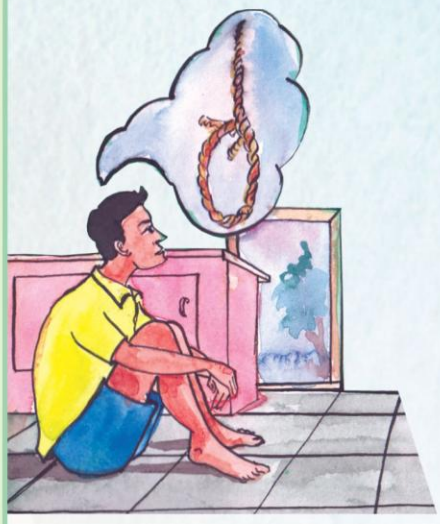

निराशा

निराशा है भूलभुलैया
इसको दिमागमें ना लाना,
मुश्किल होगा तुमको
इसमे खुदको ढूंढ़ पाना।

हारने या गलत विचारोंसे
देखो निराश न होना,
ये दुविधा और कुंठा लाती
मुश्किल होगा जी पाना।

जीवन के इस दौड़ में
निराशा तुमको छुये ना,
मनोबल के सहारे
तुम इससे दूर रहना।

निराशा से लगता
जीवन अपना बेगाना,
कैसे पूरा कर सकोगे
फिर तुम अपनोंका सपना।

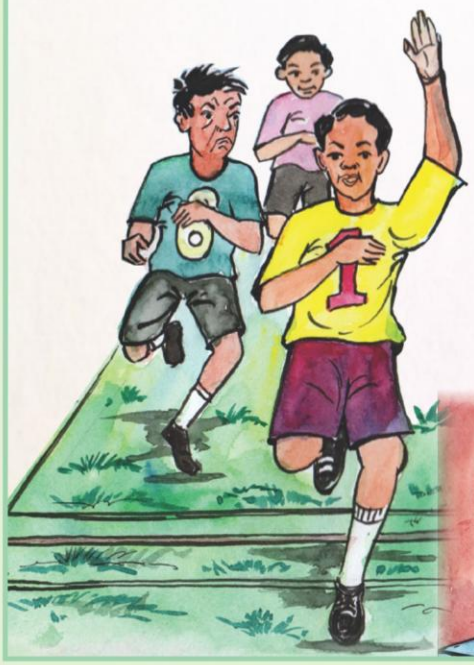

खेल भावना और मेहनत का
खुदको तुम कवच पहनाना,
निराशा आते ही
तुम उसे दूर भगाना।

अमन और शांति

हर हवा का झोकां
अमन का पैगाम लाये,
हर कौम शांति से जीये
सरहदे आतंकवादी लौटाये।

देश हमारा कितना सुंदर
शांति का दूत बन जाये,
हमारी शांति के साथ
औरोको शांति देना चाहें।

आत्मशांति के पाठ
हमने ही दुनियाँको पढ़ाये,
कितना होगा थाट
गर अमन ही हो जाये।

हम अमन और शांति की
परंपराको हरदम आगे बढ़ाये,
स्वतंत्र सेनानियों के उपकार
हम कभी ना भूल पायें।

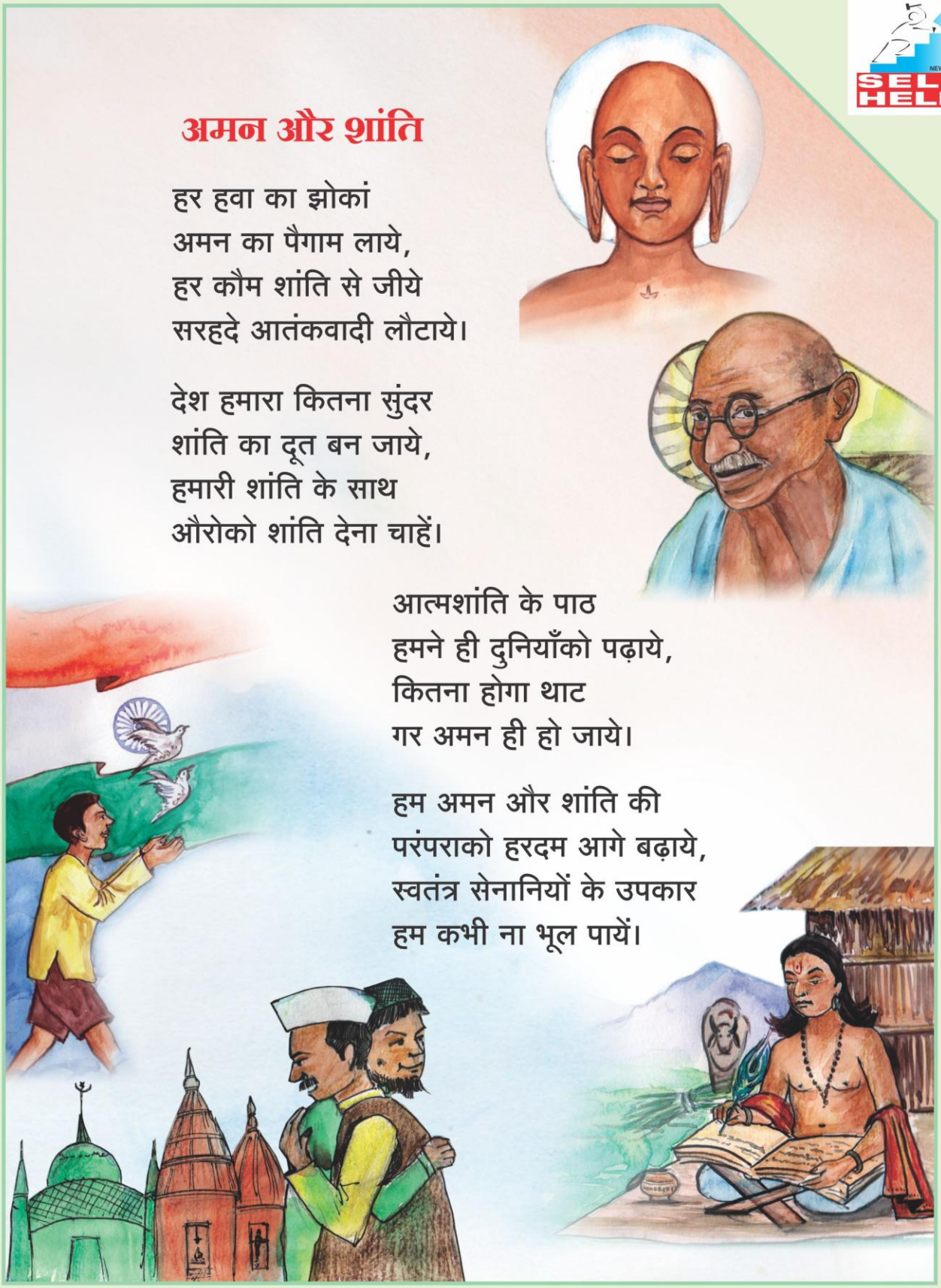

हमारे मराठी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
हारे हुये व्यक्ती को प्रोत्साहीत करने के लिए ३९ कविताओं
का संग्रह

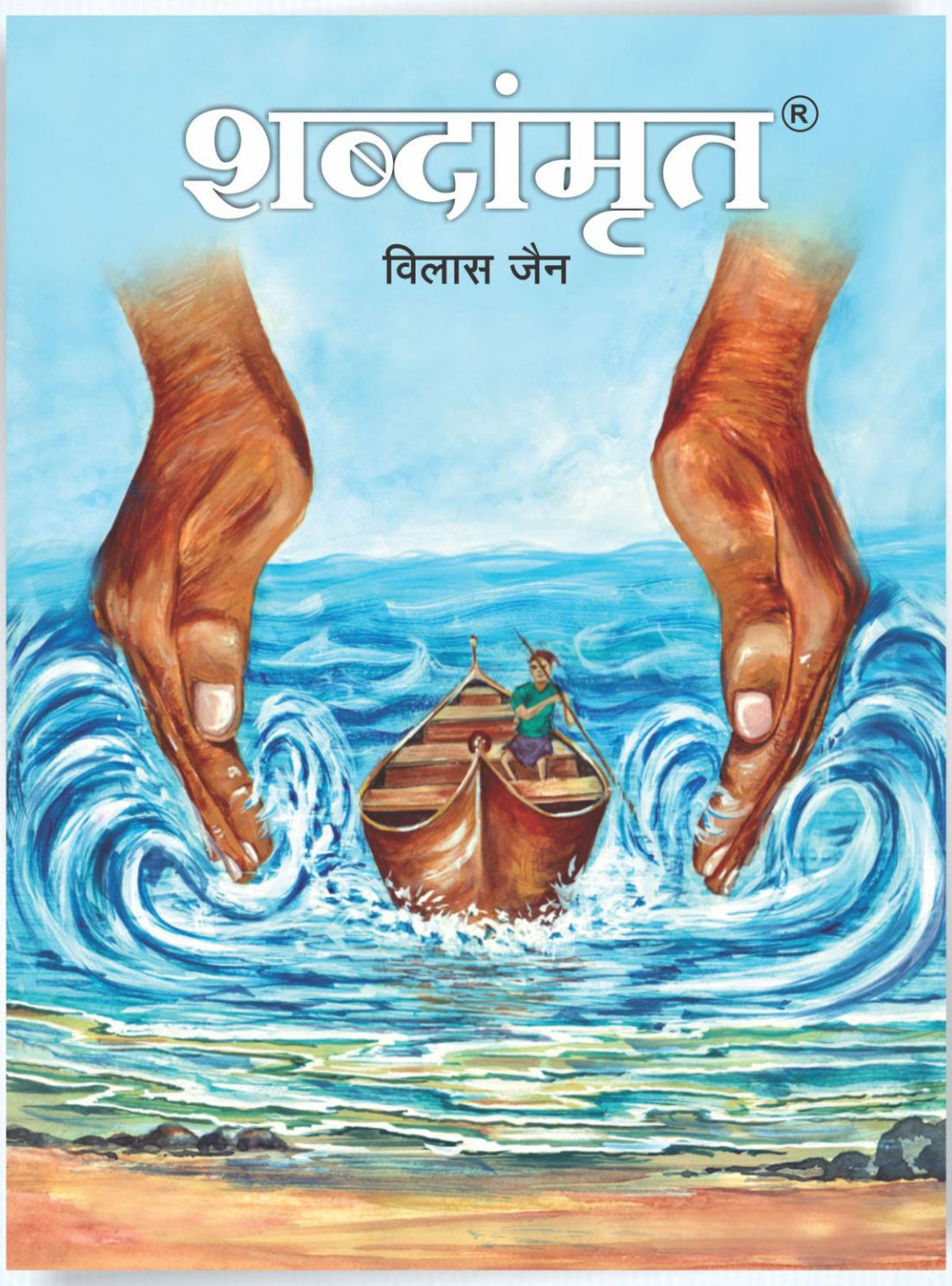

यह कार्य नही क्रांति है।

आगामी समाजपयोगी साहित्य

नवनिर्माण® के अगले भाग के कविताके विषय

भाग – ४

१) सकारात्मक सोच	२) करुणा
३) कर्मठता	४) नसीब
५) जियो और जीने दो	६) पानी का महत्व
७) रोगो से बचो	८) संगीत
९) खिलाड़ी वृत्ती	१०) हारना नहीं
११) स्तुती	१२) आशीर्वाद
१३) सृष्टि का आदर	१४) अपाहिजों के प्रति व्यवहार
१५) स्वस्थ मन	१६) विचलित न हों
१७) मनोरंजन	१८) वर्तमान मे जियो
१९) पढ़ाई	२०) भविष्य बनाओ
२१) भूतकाल से सीखो	२२) दोस्ती
२३) अच्छी आदतें	२४) जड़ता

यह कार्य नही क्रांति है।

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए २५ कविताओं **(नव निर्माण®)** के पहले दो भाग

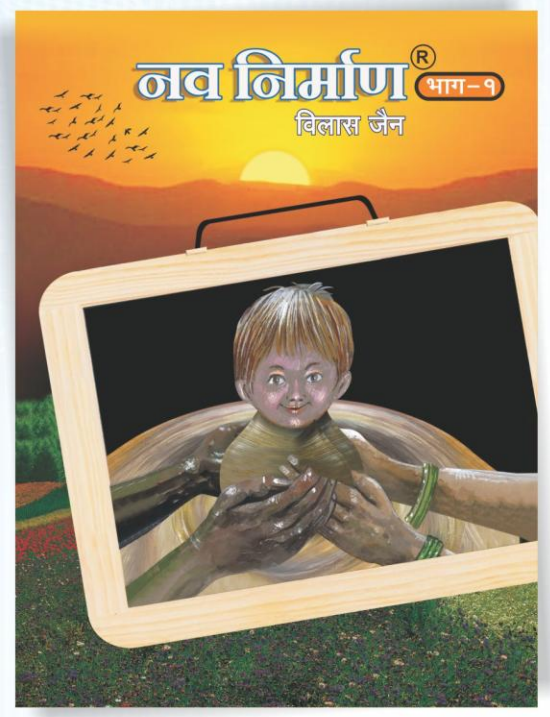

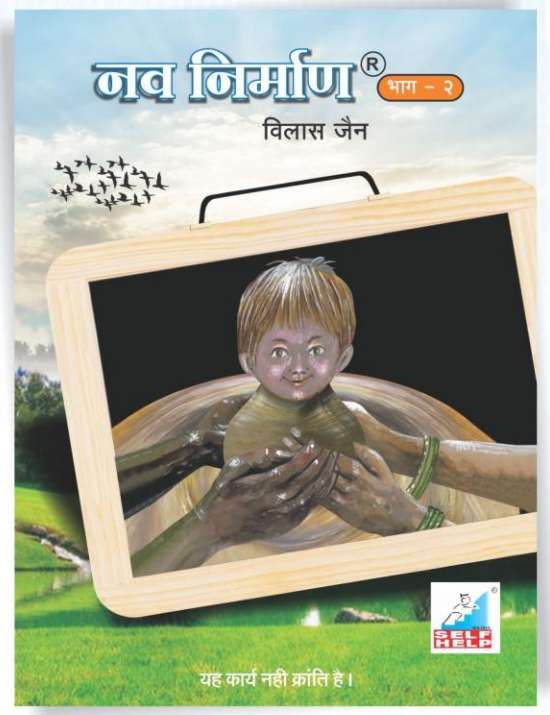

हमारे हिंदी भाषी समाजोपयोगी साहित्य
बच्चोंके मनपर संस्कार ड़ालनेके लिए २४ कविताओं **(नव निर्माण™)** का आगामी भाग

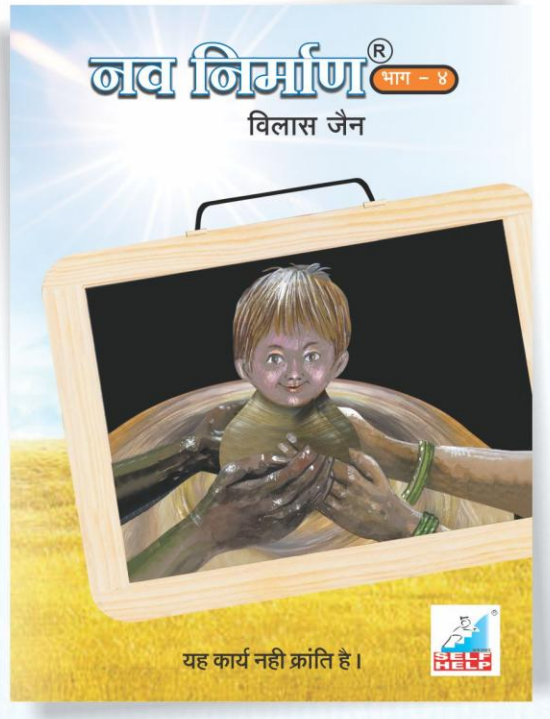

यह कार्य नही क्रांति है।

आभार

उन सब के प्रति
जो अच्छे हैं ।
अच्छा होने के लिये
सदैव तत्पर हैं ।
अच्छा हो इसलिये
प्रार्थना करते हैं ।
अच्छा करने के लिये
कड़ी मेहनत करते हैं ।
अच्छे व्यक्ति की
दिल से प्रशंसा करते हैं ।
और हरदम अच्छे के
पक्ष मे तन-मन-धन
देने को तैयार रहते हैं ।

धन्यवाद !

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है ।

विलास जैन

यह कार्य नही क्रांति है।

मेरा परिचय

पल पल में
बदलते जीवन का
क्या दूं मै
अपना परिचय।
पाने से ज्यादा
लौटा सकूं
यह मेरा है
दृढ़ निश्चय।
शिक्षा, उपाधि, अनुभव
का नही मोहताज
किसी का
अच्छा मनोदय।
लुप्त हो कुप्रथा
और बुरी आदतें
सुंदर, सुदृढ़,
समाज का
हो उदय।
अथक प्रयास
और ध्येय से
रचा कितना सुंदर
देखो मेरा परिणय।
कविताओं से निकले
अर्थ के सिवा
नहीं मेरा कोई
दूसरा परिचय।

आपसे मुझे प्रेरणा मिलती है।

विलास जैन

किमत □ १००/-

यह कार्य नही क्रांति है।